प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 12 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम से उत्तम वस्तु एक बार हँस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी से अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हँसों और पेट फुलाओ। हँसी कितने ही कला–कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मो पर खीझने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाक्रीट्स 109 वर्ष तक जिया। हँसी–खुशी का नाम जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है– 'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं।' मनुष्य के शरीर के वर्णन पर एक विलायती विद्वान ने एक पुस्तक लिखी है। उसमें वह कहता है कि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास–से–उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है कि उससे शोक और दुख की दीवारों को ढा सकते हैं। प्राण रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम–से–उत्तम उपाय मनुष्य के चित्र को प्रसन्न रखना है। सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंदरूपी मंत्र सुनाता है। एक अंग्रेज डॉक्टर कहता है कि किसी नगर में दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है।

1. हँसी भीतरी आनंद को कैसे प्रकट करती है? 2

उत्तर : हँसी भीतरी आनंद को प्रसन्नता के भाव से प्रकट करती है तथा हमारे स्वस्थ रहने से भी यह भीतरी आनंद को प्रकट करती है।

2. पुराने समय में लोगों ने हँसी को महत्व क्यों दिया? 2

उत्तर : पुराने समय में लोगों ने हँसी के महत्व को समझा। वे मानते थे कि हँसने से आयु बढ़ती है तथा अनेकों प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

3. हँसी को एक शक्तिशाली इंजन के समान क्यों कहा गया है?2

उत्तर : शोक व दुख की ऊँची से ऊँची दीवारों को भी ढहाने में हँसी के सक्षम होने के कारण इसे एक शक्तिशाली इंजन के समान कहा गया है।

4. सबसे उत्तम दवा हँसी को क्यों माना गया है? 2

उत्तर : जब मनुष्य बीमार हो जाता है तो उसे दवाइयाँ लेनी पड़ती हैं परंतु हर वक्त खीझने वाले मनुष्य पर दवाई भी काम नहीं करती हैं। इसके विपरीत यदि मनुष्य हँसता है तो वह जल्दी ठीक हो जाता है। इसलिए हँसी उत्तम दवा है।

5. हेरीक्लेस और डेमाक्रीट्स के उदाहरण से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहता है? 1

उत्तर : हेरीक्लेस और डेमाक्रीट्स के उदाहरण से लेखक हँसी के महत्व को उजागर करना चाहते हैं। खीझने वाले हेरीक्लेस ने कम आयु भोगी तथा हँसने वाले डेमाक्रीट्स 109 वर्ष की आयु तक जीवित रहे।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : हँसी का महत्व।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. जापान में चाय पीने की एक विधि है जिसे 'चा–नो–यू' कहते हैं। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जापान में चाय पीने की एक विधि को 'चा–नो–यू' कहते हैं।

2. रुचि बीमार होने के कारण आज स्कूल नहीं गई। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : चूँकि रुचि बीमार है इसलिए वह स्कूल नहीं गई।

3. प्रातःकाल होने पर चिड़ियाँ चहचहाने लगती हैं। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : ज्यों ही प्रातःकाल होता है, चिड़ियाँ चहचहाने लगती है।

4. हमारा विद्यालय अपनी संस्कृति और कार्यशैली के लिए विशेष पहचान बनाए हुए हैं। (वाक्य–भेद बताइए)

उत्तर : सरल वाक्य।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलेज वालों ने नोटिस थमा दिया। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलेज वालों द्वारा नोटिस थमा दिया गया।

2. मैं अब चल नहीं पाता। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : मुझसे अब चला नहीं जाता।

3. देशभक्तों की शहादत को आज भी याद किया जाता है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : देशभक्तों की शहादत को आज भी याद करते हैं।

4. हम इतना भार नहीं सह सकते। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : हमसे इतना भार नहीं सहा जा सकता/जाता।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद–परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. हुसैन आज दिल्ली जाएगा।

उत्तर : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'जाएगा' क्रिया का कर्ता।

2. बाजार से कुछ सामान ले आओ।

उत्तर : अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन।

3. मैं तेज चलता हूँ।

उत्तर : अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, पुल्लिंग, एकवचन, 'मैं' कर्ता की क्रिया।

4. वह कौन है?

उत्तर : एकवचन, प्रश्नवाचक सर्वनाम।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. रस की परिभाषा लिखिए।

उत्तर : काव्य और साहित्य के अनुशीलन से मिलने वाले आनंद को रस कहते हैं।

2. 'रति' किस रस का स्थायी भाव है?

उत्तर : रति शृंगार रस का स्थायी भाव है।

3. वीर रस का स्थायी भाव क्या है?

उत्तर : 'उत्साह' वीर रस का स्थायी भाव है।

4. निम्नलिखित पंक्तियों में रस पहचान कर लिखिए–

रे नृप बालक कालबस, बोलत तोहि सँभार।
धनुहीं सम त्रिपुरारि धनु, विदित सकल संसार।।

उत्तर : रौद्र रस।

5. 'शोक' नामक भाव से कौन–सा रस निष्पन्न होता है?

उत्तर : करुण रस।

खण्ड–ग 34

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य–पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

शहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सजदे, इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं। वे नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते हैं– 'मेरे मालिक, एक सुर वक्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों में सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ। उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा और अपनी झोली से सुर का फल निकालकर उनकी ओर उछालेगा फिर कहेगा, ले जा अमीरुद्दीन इसको खा ले और कर ले अपनी मुराद पूरी।'

1. बिस्मिल्ला खाँ खुदा से क्या माँगते हैं? 2

उत्तर : बिस्मिल्ला खाँ खुदा से सच्चे सुर का वरदान माँगते हैं। वे ऐसा सुर चाहते हैं जो लोगों के हृदय को छू जाए और सुनने वालों की आँखों से सच्चे मोती की तरह आँसू निकल आएँ।

2. बिस्मिल्ला खाँ किस सुर की तलाश में हैं? 2

उत्तर : बिस्मिल्ला खाँ ऐसा सच्चा सुर चाहते हैं जिसमें जबरदस्त प्रभाव हो। जिसे सुनकर लोगों की आँखों से सच्चे मोती की तरह आँसू निकल आएँ। उस सुर में हृदय को झंकृत करने की अद्भुत शक्ति हो।

3. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है? 2

उत्तर : बिस्मिल्ला खाँ भारतवर्ष के सबसे महान शहनाईवादक हैं। वे पिछले 80 वर्षों से शहनाई बजा रहे हैं। इस क्षेत्र में दूसरा कोई भी कलाकार उनका सानी नहीं है। शहनाई आनंद–मंगल का वाद्य माना जाता है। इसलिए बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा गया है।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. कैप्टन (चश्मेवाला) मूर्ति का चश्मा बार–बार क्यों बदल देता था?

उत्तर : कैप्टन नेता जी का परम भक्त था। वह चौराहे पर लगी उनकी मूर्ति पर चश्मा न देखकर आहत था। वह स्वयं फेरी लगाकर चश्मे बेचा करता था। अतः वह नेता जी की मूर्ति पर कोई–न–कोई चश्मा लगा दिया करता था। अगर कोई ग्राहक मूर्ति पर लगा फ्रेम माँग लेता तो कैप्टन वह फ्रेम उतारकर उसकी जगह कोई अन्य फ्रेम (चश्मा) लगा देता था। इस प्रकार मूर्ति पर चश्मे बदलते रहता था।

2. भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

उत्तर : भगत की पुत्रवधू जानती थी कि भगत जी संसार में अकेले हैं। उनका एकमात्र पुत्र मर चुका है। वे बूढ़े हैं और भक्त हैं। उन्हें घर–बार और संसार में कोई रुचि नहीं है। अतः वे अपने खाने–पीने और स्वास्थ्य की ओर भी ध्यान नहीं दे पाएँगे। इसलिए पुत्रवधू सेवा–भाव से उनके चरणों की छाया में अपने दिन बिताना चाहती थी। वह उनके लिए भोजन और दवा–दारू का प्रबंध करना चाहती थी।

3. 'लखनवी अंदाज' पाठ में किस पर और क्या व्यंग्य किया गया है?

उत्तर : 'लखनवी अंदाज' में नवाब साहब की नवाबी आदतों पर व्यंग्य किया गया है। लखनऊ के नवाब किस तरह अपने आपको सबसे अलग, विशेष और विनम्र मानते हैं, यह दिखाना लेखक का उद्देश्य है। वे खुद को इतना नाजुक मानते हैं कि खीरा सूँघने भर से उनका पेट भर जाता है।

4. फादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी?

उत्तर : फादर परिमल की गोष्ठी में सबसे बड़े माने जाते थे। वे सबके साथ पारिवारिक रिश्ता बनाकर रखते थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि वे सबके घरों में उत्सवों और संस्कारों पर पुरोहित की भाँति उपस्थित रहते थे। हर व्यक्ति उनसे स्नेह और सहारा प्राप्त करता था। वात्सल्य तो उनकी नीली आँखों में तैरता रहता था। इस कारण सबको उनकी उपस्थिति देवदार की छाया के समान प्रतीत होती थी।

5. शीला अग्रवाल कौन थी? उनका मन्नु पर क्या प्रभाव पड़ा था?

उत्तर : शीला अग्रवाल मन्नु भंडारी के कॉलेज में प्राध्यापिका थीं। वे स्वयं बहुत जागरूक, क्रांतिकारी, विचारवान और जोशीली महिला थीं। उनके विचारों से प्रभावित होकर मन्नू भंडारी के जीवन में भी सामाजिक जागरूकता आ गई।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

दुविधा–हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद–रात आने पर
क्या हुआ जो खिला फूल रस–बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

1. कवि का साहस किस दुविधा से पीड़ित है? 2

उत्तर : कवि का साहस मन की दुविधाओं से पीड़ित है तथा पूर्णरूप से नष्ट हो चुका है। सफलता मिलेगी या नहीं, यह मार्ग सही है या गलत, यथार्थ में जिएँ या काल्पनिक सपनों में –इन्हीं दुविधाओं के कारण कवि का साहस नष्ट हो गया है।

2. 'जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण' का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : मनुष्य को जो नहीं मिल सका, उसका दर्द भूल जाना चाहिए। उसे अपनी असफलताओं को भूलकर अपने आने वाले समय की ओर आशा–भरी दृष्टि से देखते हुए जीना चाहिए। मन में बसी यादों और कल्पनाओं में न जीकर वर्तमान को स्वीकार कर जीवन जीना चाहिए।

3. 'छाया मत छूना' का क्या अर्थ है? 2

उत्तर : छाया मत छूना का आशय है– कल्पना या अवास्तविकता की दुनिया से बचना जो मात्र छलावे की तरह होती है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. गोपियाँ कृष्ण को हारिल की लकड़ी क्यों मानती हैं?

उत्तर : हारिल की लकड़ी का तात्पर्य है– जीवन का आधार। गोपियाँ कृष्ण से अथाह प्रेम करती हैं। वे उन्हें अपने जीवन का आधार मानती हैं। इसलिए वे कृष्ण को 'हारिल की लकड़ी' कहती हैं।

2. परशुराम द्वारा सहस्त्रबाहु से शिव धनुष तोड़ने वाले की तुलना कहाँ तक उचित है? अपने विचारानुसार लिखिए।

उत्तर : सहस्त्रबाहु से धनुष तोड़ने वाले की तुलना परशुराम की वास्तविकता से अवगत न होने की अवस्था की। फिर भी सहस्त्रबाहु ने अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध कामधेनु गाय का बलपूर्वक अपहरण किया था। राम ने जनक की इच्छा और विश्वामित्र की आज्ञा से धनुष–भंग किया था। राम का कोई नहीं था।

3. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस–किस से की गई है?

उत्तर : उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित से की गई है–

1. कमल के पत्तों से, जो जल में रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होते।
2. जल में पड़ी तेल की बूँद से, जो जल में धुलती–मिलती नहीं।

उद्धव भी कृष्ण के संग रहकर भी उसके प्रेम से प्रभावित नहीं हो सके इसलिए उसकी तुलना इन चीजों से की गई है।

4. संगतकार की आवाज में एक हिचक–सी क्यों प्रतीत होती है?

उत्तर : संगतकार की आवाज में एक हिचक–सी इसलिए प्रतीत होती है क्योंकि वह जानता है कि उसे मुख्य गायक के स्वर

में अपना स्वर मिलाना है। उसी के स्वर को प्रभावी बनाना है। इसलिए यह भी जरूरी है कि उसका अपना स्वर मुख्य गायक के स्वर से अधिक ऊँचा और प्रभावी न हो।

5. फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर : इसमें कवि कहना चाहता है कि किसानों के हाथों का प्यार भरा स्पर्श पाकर ही ये फसलें इतनी फलती-फूलती हैं। ये किसानों के श्रम की गरिमा और महिमा ही है जिसके कारण फसलें इतनी अधिक बढ़ती चली जाती हैं।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए- $3 \times 2 = 6$

1. बच्चे प्रायः निरीह पशु-पक्षियों के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार करते हैं। आपके अनुसार ऐसा करना कितना उचित है?

उत्तर : बच्चे चिड़ियों, चूहों आदि निरीह प्राणियों के साथ क्रूरता नहीं करते। वे उनके साथ खेल करना चाहते हैं। वे नहीं जानते कि उनकी शरारतों से चिड़ियों या चूहों को दुख पहुँचेगा। वे वास्तव में कौतूहल का मजा लेना चाहते हैं- देखें कि क्या होता है। यदि उनकी शरारतें हिंसा-भाव से होती तो गलत होतीं, परंतु वे शुद्ध खेल होती हैं इसलिए उन्हें समझाया जा सकता है किंतु क्रूर नहीं कहा जा सकता।

2. जॉर्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे?

उत्तर : उस दिन सभी अखबार इसलिए चुप थे क्योंकि भारत में न तो कहीं कोई अभिनंदन कार्यक्रम हुआ, न सम्मान-पत्र भेंट करने का आयोजन हुआ, न ही किसी नेता ने कोई उद्घाटन किया, न कोई फीता काटा गया, न सार्वजनिक सभा हुई। इसलिए अखबारों को चुप रहना पड़ा। यहाँ तक कि हवाई अड्डे या स्टेशन पर स्वागत समारोह भी नहीं हुआ। इसलिए किसी नेता का ताजा चित्र नहीं छप सका।

3. 'कटाओ भारत का स्विट्जरलैंड है।' इस कथन पर लेखिका की सहयात्री मणि को क्या आपत्ति थी?

उत्तर : कटाओ सिक्किम का एक अनजान-सा, किंतु बेहद खूबसूरत स्थान है। गाइड जितेन ने कहा कि- कटाओ भारत का स्विट्जरलैंड है, तो लेखिका की सहयात्री मणि ने इस पर आपत्ति की, क्योंकि वह स्विट्जरलैंड घूम चुकी थी। उसने प्रतिवाद करते हुए कहा कि एक तो स्विट्जरलैंड इतनी ऊँचाई पर नहीं है और दूसरे वह इतना खूबसूरत नहीं है, जितना कि कटाओ।

खण्ड-घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए- 10

(1) छात्र असंतोष

संकेत बिंदु- ✲ भूमिका ✲ छात्र असंतोष का प्रभाव ✲ शिक्षा का महत्व ✲ उपसंहार

(2) दैव-दैव आलसी पुकारा

संकेत बिंदु- ✲ भूमिका ✲ कर्म का महत्व ✲ मनुष्य में भाग्यवादी दृष्टिकोण ✲ आलस्यः मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु ✲ उपसंहार

(3) मुसीबत में ही मित्र की परख होती है

संकेत बिंदु- ✲ अच्छे मित्र की पहचान ✲ मित्र के गुण ✲ निष्कर्ष

उत्तर :

(1) छात्र असंतोष

संकेत बिंदु- भूमिका ✲ छात्र असंतोष का प्रभाव ✲ शिक्षा का महत्व ✲ उपसंहार

भूमिका- छात्र असंतोष का आशय है- विद्यार्थियों का वर्तमान शिक्षा एवं शिक्षा प्रणाली से असंतुष्ट होना। विद्यार्थियों की यह असंतुष्टि पाठ्यक्रम, शिक्षण प्रक्रिया अथवा परीक्षा के मापदंड या किसी भी विषय को लेकर हो सकती है। हम कई बार देखते हैं कि कुछ विद्यार्थियों को उनके पसंदीदा पाठ्यक्रमों अथवा स्थानों में प्रवेश नहीं मिल पाने के कारण भी उनमें असंतोष की भावना घर कर लेती है।

बहुत बार तो राजकीय उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश न मिलने की स्थिति में विद्यार्थियों को विवश होकर निजी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश लेना पड़ता है। निजी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के लिए उनसे अधिक राशि वसूली जाती है। संपन्न परिवारों के बच्चे तो अधिक शुल्क देकर निजी शिक्षण संस्थाओं में मनपसंद पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने में सफल रहते हैं, किंतु निर्धन विद्यार्थियों के सामने धन के अभाव में पढ़ाई छोड़ने या पारंपरिक सस्ते पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं बचता। इस स्थिति में उनके भीतर स्वाभाविक रूप से शिक्षा के प्रति असंतोष की भावना उत्पन्न हो जाती है और वे संपूर्ण शिक्षा तंत्र को कोसने लगते हैं।

छात्र असंतोष का प्रभाव- असंतोष की यह स्थिति धीरे-धीरे एक बहुत बड़े विद्यार्थी समूह को अपनी गिरफ्त में ले लेती है। यह अवस्था बड़ी विकट होती है। वस्तुतः सूचना प्रौद्योगिकी के इस उन्नत युग में भी व्यावसायिक शिक्षा की अपेक्षित व्यवस्था भारत में अब तक नहीं हो पाई है। पारंपरिक शिक्षा प्राप्त कर उच्च उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् भी अधिकतर विद्यार्थी किसी विशेष कार्य के योग्य नहीं होते। इसके कारण शिक्षित बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। शिक्षा के निजीकरण के कारण उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षण संस्थानों की संख्या तो बढ़ गई, किंतु इन संस्थानों में विद्यार्थियों का अत्यधिक शोषण होता है। यहाँ शिक्षा के लिए पर्याप्त संसाधनों का भी अभाव होता है। विद्यार्थियों द्वारा विरोध किए जाने पर उन्हें संस्थान से निकाले जाने की धमकी दी जाती है। अतः विद्यार्थियों के पास कुंठित होकर अपने भाग्य को कोसने के अतिरिक्त और कोई मार्ग शेष नहीं बचता।

शिक्षा का महत्व– वर्तमान समय में मानवीय विकास हेतु शिक्षा का विशेष महत्व है। समाज एवं देश में समय के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं, इसलिए शिक्षा के उद्देश्य में भी समय के अनुसार परिवर्तन होते हैं। उदाहरण के लिए वैदिककाल में वेद मंत्रों की शिक्षा को पर्याप्त कहा जाता था, किंतु वर्तमान काल में मनुष्य के विकास के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया जाना चाहिए, परंतु कुछ स्वार्थी राजनीतिक दल विद्यार्थियों को अपने साथ मिलाकर अपना उल्लू सीधा करने में जुटे रहते हैं, इसलिए वे शिक्षण संस्थाओं में राजनीति को बढ़ावा देते हैं। इस कारण देश के कुछ प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान राजनीति के अखाड़े का रूप लेते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में पढ़ाई तो बाधित होती ही है, साथ ही विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति असंतोष की भावना उत्पन्न होती है।

उपसंहार– छात्र असंतोष को दूर करने के लिए सबसे पहले देश की शिक्षा व्यवस्था में सुधार कर इसे वर्तमान समय के अनुरूप करना होगा। इसके लिए व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षण संस्थानों की स्थापना पर्याप्त संख्या में करनी होगी। इसके अतिरिक्त राजनीति को शिक्षा से दूर रखना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि इन संस्थाओं में शिक्षक एवं कर्मचारी अपनी मनमानी कर विद्यार्थियों का भविष्य नष्ट न कर पाएँ।

(2) दैव–दैव आलसी पुकारा

संकेत बिंदु– भूमिका ✲ कर्म का महत्व ✲ मनुष्य में भाग्यवादी दृष्टिकोण ✲ आलस्य : मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु ✲ उपसंहार

भूमिका– प्रकृति में मनुष्य को सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है, लेकिन कुछ लोग अपने आलस्य के कारण, असफलता प्राप्त होने पर, भाग्य को जिम्मेदार ठहराकर परिश्रम से दूर भागते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति कार्य को कभी समय से पूरा नहीं कर पाते, जो व्यक्ति परिश्रमी और पुरुषार्थी होते हैं, सफलता उन्हीं को प्राप्त होती है। भाग्य के भरोसे रहने वाले मनुष्य आलसी, दुर्बल, पंगु, कायर तथा अकर्मण्य होते हैं, इसलिए आलसी मनुष्य के लिए कहा गया है।

"कायर मन का एक अधारा,
दैव–दैव आलसी पुकारा।।"

कर्म का महत्व– मनुष्य कर्म को कर्तव्य मानकर बाधाओं, संघर्षों तथा असफलताओं का साहस एवं दृढ़ता से मुकाबला करता हुआ, अपने गंतव्य को प्राप्त करने में सफल होता है।

कर्तव्य और परिश्रम से व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाता है और उसके लिए जीवन निर्वाह करना सरल हो जाता है। मनुष्य इसे छोड़ना चाहे तो भी छोड़ नहीं सकता। यह जीवन का अभिन्न अंग नहीं, जीवन की पहचान है। इसके बिना जीवन में कोई भी सुख प्राप्त नहीं हो सकता। नेपोलियन ने विश्वास के साथ कहा था

"मैंने कर्म से ही अपने को बहुगुणित किया है।"

मनुष्य में भाग्यवादी दृष्टिकोण– आलसी व्यक्ति 'दैव' अर्थात् भाग्य के भरोसे अपना जीवन छोड़ देते हैं। वे कर्म करने से विमुख होकर आलसी प्रवृत्ति के हो जाते हैं। वे अपनी असफलता को देखकर अपने दुर्भाग्य को कोसते हैं या फिर किसी दैवीय शक्ति को पुकारते हैं। भाग्य को कोसना तथा दैव को दोष देना उनकी आदत बन जाती है।

आलस्य : मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु– आलस्य न केवल मानसिक एवं आर्थिक दृष्टि से मनुष्य के विकास को बाधित करता है, बल्कि शारीरिक एवं सांस्कृतिक रूप से भी व्यक्ति को कमजोर कर देता है। आलस्य शरीर का सबसे बड़ा शत्रु होने के साथ–साथ उसके सर्वांगीण विकास में सबसे बड़ी बाधा है। प्रखर बुद्धि का प्रतिभाशाली व्यक्ति भी आलस्य के कारण अपने विकास या प्रगति के दायरे (कार्यक्षेत्र) को अत्यंत संकीर्ण बना लेता है।

उपसंहार– जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए मनुष्य का कर्म करना अनिवार्य है। कर्म ही जीवन है, कर्म के अभाव में जीवन का अर्थ नहीं रह जाता। कर्म करने वाला व्यक्ति सफलता के शिखर पर चढ़ता हुआ आगे बढ़ता है। जीवन की सार्थकता इसी में है कि समस्त मोह, संशय, डर, आलस्य को त्यागकर व्यक्ति कर्म में प्रवृत्त रहे।

(3) मुसीबत में ही मित्र की परख होती है

संकेत बिंदु– अच्छे मित्र की पहचान ✲ मित्र के गुण ✲ निष्कर्ष

अच्छे मित्र की पहचान– सामाजिक प्राणी होने के नाते व्यक्ति समाज में विभिन्न सामाजिक संबंधों को स्थापित करता है और विभिन्न सामाजिक संबंधों की अपनी–अपनी मर्यादाएँ होती हैं, लेकिन इन सभी मर्यादाओं से परे एक संबंध होता है मित्रता का, जहाँ किसी भी प्रकार की मर्यादा या सीमा संबंधी बंधन नहीं होता। माँ के आँचल के बाद सच्चे मित्र का सान्निध्य ही होता है, जहाँ व्यक्ति स्वयं को विश्रांति, सच्चा आश्वासन एवं आत्मीयता के निकट अनुभव करता है। सच्चा मित्र निःस्वार्थी होता है, जो अपने मित्र के कष्टों को देखकर अत्यधिक व्यग्र हो उठता है। वास्तव में, मित्रता दो हृदयों को को बाँधने वाली प्रेम की डोर है। यह एक ऐसा अनमोल रत्न है, जिसे दुनिया की कोई भी कीमत खरीद नहीं सकती, इसलिए राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने कहा है कि

"मित्रता है बड़ा अनमोल रतन
कब इसे तौल सकता है धन?"

मित्र के गुण– सच्चा मित्र अपने मित्र को गलती एवं पाप करने से रोकता या बचाता है। उसके गुप्त रहस्यों को छिपाकर रखता है और गुणों को सबके समक्ष उजागर करता है। विपत्ति के समय भी उसके साथ बना रहता है और ऐसे समय में उसकी सहायता भी करता है तथा तन–मन–धन देने में भी कोई संकोच नहीं करता। सच्चे मित्र आलोचक की भूमिका भी अच्छी तरह से निभाते हैं। सच्चे मित्र हमेशा सही मार्ग

पर चलने की ही सलाह देते हैं, जो मनुष्य अपनी त्रुटियों से परिचित नहीं रहता, अपनी दुर्बलताओं का साझात्कार नहीं करता, वह जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता दुर्बलताओं का साक्षात्कार एवं त्रुटियों से परिचित कराने का गंभीर कार्य केवल सच्चा मित्र ही कर सकता है।

निष्कर्ष– भारतीय इतिहास आदर्श मित्रों के उदाहरणों से भरा पड़ा है। कृष्ण–सुदामा, कृष्ण–अर्जुन, कर्ण–दुर्योधन, राम–सुग्रीव, राम–विभीषण, राम–निषादराज गृह आदि की मित्रता इतिहास में प्रसिद्ध है, लेकिन आज के भौतिकवादी युग में सच्चे मित्र मिलना दुर्लभ है। यह सत्य है कि पूर्ण रूप से निर्दोष एवं सर्वगुण संपन्न व्यक्ति कोई भी नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ–न–कुछ कमी अवश्य रहती है, इसलिए सोच–समझकर, जाँच–परख कर सच्चे मित्र का चुनाव करना चाहिए और आजीवन उसका साथ नहीं छोड़ना चाहिए। मित्रता जितनी बहुमूल्य है, उसे बनाए रखना उतना ही कठिन है, इसलिए मित्रता को स्थिर एवं दृढ़ बनाए रखने के लिए सहिष्णुता एवं उदारता परम आवश्यक है।

12. खाने–पीने की वस्तुओं में मिलावट की घटनाएँ दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। अपने क्षेत्र के स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखकर इस विषय की सूचना देते हुए उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट कीजिए। 5

उत्तर :
सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी
नगरपालिका
जहाँगीरपुरी, दिल्ली
विषय : खाने–पीने की वस्तुओं में मिलावट हेतु।
महोदय,

मैं आपका ध्यान इस शहर में हो रही मिलावट की घटनाओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। शहर में खाने–पीने की चीजों में धड़ल्ले से मिलावट की जा रही है। दूध, दही, पनीर, खोया, खाद्य तेल आदि में दुकानदार मिलावट कर रहे हैं। खाने–पीने की चीजों के अतिरिक्त पेट्रोल में भी मिट्टी के तेल की मिलावट की जा रही है। रसोईघर के सभी मसालों में मिलावट की जा रही है। खाद्य–पदार्थों की मिलावट का असर लोगों के स्वास्थ्य पर देखा जा सकता है। इनको रोकने वाला कोई नहीं है।

महोदय, आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इस बारे में सख्ती बरतें। आपके विभाग के कर्मचारियों की मिलीभगत के कारण ही यह धंधा चल रहा है। कृपया आप उन पर सख्त कार्यवाही करें ताकि हम नागरिक शुद्ध भोजन जुटाने के साथ–साथ रोगमुक्त भी हो सकें।
धन्यवाद!
भवदीय
सुरेश गुप्ता
संयोजक जन–कल्याण केन्द्र, जहाँगीरपुरी
दिनांक– 19 अक्टूबर, 2019

अथवा

वन–विभाग द्वारा लगाए गए वृक्ष सूखते जा रहे हैं। इस समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए किसी प्रसिद्ध दैनिक पत्र के संपादक को बिरला कुंज निवासी विकास की ओर से एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :
सेवा में,
संपादक
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली
विषय : सूखते हुए वृक्षों की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करने हेतु।
महोदय,

मैं इस पत्र के माध्यम से वन–विभाग के अधिकारियों को सचेत करना चाहता हूँ। कृपया इसे छापकर कृतार्थ करें।

वन–महोत्सव बीते अभी दस दिन हुए हैं। दस दिनों पहले सब जगह बड़ा उत्साह था। सड़कों के किनारे हजारों पौधे लगाए गए। पौधों पर जाल खड़े किए गए। जालों पर रंग–रोगन किया गया। हरियाली की महिमा पर हरे–भरे नारे लिखे गए। हमें लगा कि अब दिल्ली हरी–भरी होकर रहेगी। परंतु यह सपना अभी–से टूटने लगा है। कितने ही जाल अपने स्थानों से गायब हैं। कितने पौधे मुरझा गए हैं। अधिकतर पौधे सूखे पड़े हैं। लगता है कि किसी ने उन बेचारों की सुध नहीं ली। ये सरकारी कर्मचारी तभी जागते हैं, जब कोई बड़ा अधिकारी या मंत्री दौरे पर आता है। उसके बाद ये सो जाते हैं।

मेरा वन–विभाग के अधिकारियों से अनुरोध है कि इन पौधों को लगाया है तो इनकी देखभाल करें। इन्हें पानी दें। वरना इन्हें इनकी जमीन से उखाड़कर इन पर अत्याचार न करें। इन्हें सूखने के लिए छोड़ देना भ्रूण–हत्या के समान है। आशा है, अधिकारी मुझ प्रकृति–प्रेमी की बात सुनेंगे और शीघ्र कार्यवाही करेंगे।

भवदीय
विकास
बिरला कुंज
दिल्ली
दिनांक– 20 नवंबर, 2019

13. विद्यालय की कार्यानुभव–प्रयोगशाला में बनी मोमबत्तियों तथा उपयोगी वस्तुओं की बिक्री हेतु लगभग 25–50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

25% की छूट *25% की छूट*

श्री स्वामी नारायण विद्यालय, दिल्ली

बच्चों व्दारा निर्मित मोमबत्तियाँ तथा अन्य उपयोगी वस्तुओं की बिक्री शीघ्र

- **नन्हें कारीगरों का उत्साह और अपने घर की शोभा बढ़ाएँ।**
- **सुंदर वस्तुओं तथा रंग-बिरंगी मोमबत्तियों को खरीदने हेतु पधारें।**
- 500 रुपए तक की खरीददारी में 25 प्रतिशत की आकर्षक छूट।

6/126, एच ब्लाक, मल्कागंज, दिल्ली।

अथवा

अपना घर किराए हेतु देने के लिए लगभग 25–50 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर :

किराए हेतु

- आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित,
- 3 कमरे वाला, नवनिर्मित घर, पार्क फेसिंग,
- 24 घंटे पानी की सुविधा,

गुलाबी नगरी योजना,
ब्लॉक-जी, भवानी अपार्टमेंट,
जयपुर।

सम्पर्क करें- 8875012334

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and paper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.